अभिज्ञानशाकुन्तलम्

प्रथमोऽङ्कः

(1) या सृष्टिः स्रष्टुराद्या ..... वस्ताभिरष्टाभिरीश

सन्दर्भ :- प्रस्तुत श्लोक महाकवि कालिदास ने महाभारत के 'शकुन्तलोपाख्यान' की कथा के आधार पर ही 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की रचना की है। किन्तु, कवि की उद्भाविनी प्रतिभा एवं सृजनमयी कल्पना ने महाभारत की नीरस एवं शुष्क कहानी को सजीव एवं सरस बना दिया है। इसमें कवि ने हस्तिनापुर के राजा दुष्यन्त तथा मेनका पुत्री व कण्व धर्मपुत्री शकुन्तला के प्रणय कथा का वर्णन किया गया है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का पूर्ण नाटक दुष्यन्त तथा शकुन्तला के मिलन, गान्धर्व-विवाह, दुष्यन्त का गमन, शकुन्तला का दुष्यन्त के प्रति विरह-व्यथा, दुर्वासा का शाप, पुनः मिलन आदि सभी का वर्णन इसी नाटक में कालिदास ने बहुत ही रोचक व मनोहर तरीके से किया है।

प्रसंग :- संस्कृत साहित्य में तीन प्रकार के मंगलाचरण होते हैं - (1) नमस्कारात्मक (2) आशीर्वादात्मक (3) वस्तुनिर्देशात्मक। प्रस्तुत श्लोक में कालिदास ने 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक का प्रारम्भ करने से पूर्व नमस्कारात्मक मंगलाचरण के द्वारा जगत के पिता शिव की वन्दना की है।

व्याख्या :- जो संसार को रचने वाले विधाता की प्रथम रचना है ऐसी जलमयी मूर्ति, जो शास्त्रविधि के अनुसार हवन की गई सामग्रियों को देवताओं के

Scanned with CamScanner

प्रास ले जाती है (ऐसी अग्निरूपी मूर्ति, जो हवन करने वाला है ऐसी यजमान की मूर्ति, जो दो कालो का विधान करने वाली ऐसी सूर्य तथा चन्द्रमयी मूर्ति, जो संसार को व्याप्त करके अवस्थित ऐसी आकाश रूपी मूर्ति, जिसको सभी बीजो का कारण कहते है ऐसी पृथ्वी रूपी मूर्ति, जिसके द्वारा जगत के सभी प्राणी प्राणवान कहलाते है ऐसी वायुरूपी मूर्ति, इन उपर्युक्त प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली अष्टमूर्तियों से युक्त समस्त जगत के स्वामी भगवान शिव हम सभी दर्शनार्थ की तथा नटादिको की रक्षा करें।

विशेष :- (i) यहाँ पर अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है।

(ii) इस श्लोक में स्रग्धरा नामक छन्द है जिसका लक्षण है - "म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियति - युता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।"

(2) तवास्मि गीतरागेण .... सारङ्गणातिरंहसा"

प्रसंग :- जब सूत्रधार नटी को नाटक आराम्भ के लिए कहता है कि तुम ग्रीष्म ऋतु का वर्णन करो ताकि सभी गणों का मनोरंजन हो जाए तथा नाटक आरंभ किया जा सके तब नटी बहुत ही सुन्दर ग्रीष्म ऋतु तथा उसी ऋतु मे चन्चल स्त्रियों का वर्णन करती है तब उसे सुनकर श्रोता व सूत्रधार मंत्रमुग्ध हो जाते है। इसी प्रशंसा में सूत्रधार नटी से कहता

है -

अनुवाद -> हे नटी, तुम्हारे मनोहर गीत ने तो मुझे उसी प्रकार आकर्षित कर लिया था जिस प्रकार उस मृग के द्वारा दुष्यन्त को आकर्षित कर लिया गया था जिसके कारण वह अपनी टुकड़ी (सेना) को भी भूलकर केवल उस हिरण के पीछे आसक्त चित हो जाता है।

विशेष -> (i) इस श्लोक में भाँती उपमा अंलकार है।

(ii) इसमे पथ्यावक्त्र छन्द है।

(iii) सारङ्ग = सार + अङ्ग

(iv) सारङ्ग - सारम् अङ्गमस्य।

(3) ग्रीवाभङ्गाभिरामं - - - - - स्तोकमुर्व्यां प्रयाति॥

प्रसंग -> जब राजा दुष्यन्त उस मृग का पीछा करते है तो सारथि को ऐसा प्रतीत होता है कि स्वयं भगवान शिव धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाए मृग का पीछा कर रहे है। तभी उस सारथी का राजा दुष्यन्त कहते है कि हरिण तो बहुत दूर चला आया है उसी हरिण की गति का वर्णन यहाँ किया है -

व्याख्या -> दुष्यन्त कहता है कि वह मृग अपने पीछे रथ को दौडते देखकर भागता हुआ बार-बार पीछे देखता है, उसे कही बाण न लग जाए इस भय से वह अपने पीछे वाले भाग को आगे वाले भाग मे प्रविष्ट करना चाहता हो अर्थात् उसी गति बहुत ही तीव्र है, दौडने के कारण उसका खुलेः मुख से आधे चबाए कुश उसके मार्ग मे गिरते जा रहे है जिससे कुशो द्वारा एक मार्ग का निर्माण हो रहा

है। ऐसा यह मृग ऊँची छलांग लगाता हुआ आकाश में अत्यधिक तथा धरती पर तो अल्प मात्र चल रहा है।
विशेष → (i) इसमें स्रग्धरा छन्द है।
(ii) दर्भदृष्टि = बद्धा दृष्टिः येन सः। (बहुव्रीहि)
(iii) प्रयाति = प्र + या + लट्।
(iv) प्रविष्टः = प्र + विश् + क्त।
(v) शरपतनभयात् = शरस्य पतनं तस्मात् भयं

(4) क्व बत हरिणकानां जीवितं चातिलोलं
क्व च निशितनिपाता वज्रसाराः शरास्ते॥

प्रसंग → इस श्लोक में कालिदास उस समय का वर्णन करते है जब दुष्यन्त मृग को मारने ही वाला होता है तभी दो ऋषियो का प्रवेश होता है तथा वे दोनो दुष्यन्त को बताते है कि यह आश्रम का मृग है इसे मत मारिए इसी सन्दर्भ मे वे कहते है कि -
व्याख्या → हे राजन ! इस सुकुमार मृग के शरीर पर यह अग्नि तुल्य बाण मत मारिए। वह कहते है कि कहाँ तो यह चंचल प्राणी का जीवन और कहाँ यह तीक्ष्ण प्रहार करने वाला आपका व्रज के तुल्य बाण ?

तत् साधुकृतसन्धानं ... प्रहर्तुमनागसि

व्याख्या → हे राजन ! कृपया आप धनुष पर चढाए

हुए बाण को उतार लीजिए। आपका शस्त्र तो पीड़ितों की रक्षा के लिए है यह शस्त्र निरपराधों पर प्रहार करने के लिए नहीं है इसीलिए कृपया आप इस चन्चल मृग प्राणी को मत मारिए।

विशेष → (i) मृगशरीरे = मृगस्य शरीरे।
(ii) पुष्पराशौ = पुष्पाणां राशौ। (तत्पुरुष)
(iii) निपाता = नि + पत् + घञ्।
(iv) यहां अनुष्टुप छन्द का प्रयोग किया गया है।
(v) साधुकृतसंधानम् = साधु कृतं सन्धानं यस्य तम्।
(vi) आर्तत्राणाय = आ + तृ + क्त। (बहुव्रीहि)

(5) कुल्याम्भोभिः पवनचपलैः शाखिनो धौतमूला
भिन्नो रागः किसलयरुचामाज्यधूमोदगमेन।
एते चार्वागुपवनभुवि छिन्नदर्भांकुरायां
नष्टाशंका हरिणशिशवो मन्दमन्दं चरन्ति

प्रसंग → जब दुष्यन्त उन तपस्वीयों की बात मानकर मृग को न मारने की उनकी प्रार्थना को मान लेता है तब वे उसे चक्रवर्ती पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देते हैं तथा उन्हें आतिथ्य सत्कार के लिए महर्षि कण्व के आश्रम में आमन्त्रित करते हैं तब वह अपने सारथी सहित आश्रम की तरफ प्रस्थान करता है और कुछ दूर पहुँचने पर वह सारथि को कहता है कि लगता है तपोवन आ गया है जब सारथि उसका कारण पूछता है तो दुष्यन्त कहता है -
व्याख्या → यहाँ पर मृग रथ के शब्द को सुनकर भी भयभीत नहीं हो रहे हैं तथापि वे तो निःसंकोच शान्ति से यहाँ विचरण कर रहे हैं।

वायु के कारण नहरों के जल से वृक्षों की जड़े गिली हुई है अर्थात् यदि मृदु वन होता तो यहाँ वृक्ष की जड़े सुखी हुई होती परन्तु यहाँ तो नहर के जल के कारण इनकी जड़ो में पानी भरा है तथा यज्ञ के घी के धुएं के उठने वाले से कोमल पत्तो पर लालिमा नष्ट होकर वे पत्ते कुछ भूरे हो गये है।

विशेष → (i) पवनचपलैः = पवनेन वायुना चपलैः चञ्चलैः।

(ii) इसमे मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग हुआ है जिसका लक्षण है - मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरस-नगैर्म्भौ नतौ ताद गुरु चेत।

(iii) छिन्नः = छिद् + क्त।

(iv) शाखिनः = शाखा + इनि।

(6) इदं किलाव्याजमनोहरं - - - - - - - - पश्यामि।

प्रसंग → जब राजा दुष्यन्त आश्रम में प्रवेश करते है जब उन्हे कुछ स्त्रीयों की वार्तालाप की ध्वनि राजा को सुनाई देती है तो वह उस तरफ उनकी बातो को छुपकर सुनता है तथा शकुन्तला को देखकर वह मोहित हो जाता है वह सोचता है कि यदि तपस्वी स्त्री यदि इतनी सुन्दर है तो इनके समक्ष तो हमारी महल की सभी रानियों का सौन्दर्य शुन्य है तथा वह सोचता है कि महर्षि कण्व बहुत ही क्रूर स्वभाव के होंगे -

व्याख्या → क्योंकि जो मनुष्य कण्व शरीर से ही जो स्त्री कोमल है तथा सुन्दर है उसे

वह तपस्या के योग्य बनाना चाहते है यह तो उसी प्रकार है कि कोई व्यक्ति नीलकमल के पत्ते के अग्रभाग से शमीलता को काटने का प्रयास कर रहा है।
विशेष -> (i) इसमे वंशस्थ छन्द है।
लक्षण = जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।
(ii) नीलोत्पलपत्रधारया = नीलं च तत् उत्पलम्।
(कर्मधारय)
नीलोत्पलस्य पत्रस्य धारया
(iii) व्यवस्यति = वि + अव + सो + लट्
(iv) विक्षात्यम् = वि + शाम्भ + क्त।

--- xxx --- xxx --- xxx ---

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) महर्षि : कण्वस्य आश्रम : कुत्र आसीत् ?
मालिनी नद्यास्तटे।

(2) अभिज्ञानशाकुन्तलम् विदुषकस्य किं नाम?
माढव्य, माधव्य

(3) 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' पदस्य कोऽभिप्राय: अस्ति?
'अभिज्ञायते अनेन इति अभिज्ञानम्।' अभि + ज्ञा + ल्युट्
अभिज्ञानेन स्मृता शकुन्तला यत्र (नाटके) तत् अभिज्ञान-शाकुन्तलम्' अथवा 'अभिज्ञानसहितं शाकुन्तलम्' इति अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

(4) हंसपादिका का आसीत्?

(5) शकुन्तलया सह हस्तिनापुरे के अगच्छताम्?

(6) भगवतः शिवस्य अष्टमूर्तयः काः सन्ति?
जलमयी मूर्तिः, अग्निरूपा मूर्तिः, यजमानरूपा मूर्तिः
सूर्यरूपा मूर्तिः, चन्द्ररूपा मूर्तिः, आकाशरूपा मूर्तिः,
पृथ्वीमयी मूर्तिः, वायुरूपा मूर्तिः।

(7) 'अतिक्रमोऽयं लोकतन्त्राधिकारः' इति कः कम् उद्दिश्य कथयति? कञ्चुकी → राजानं

(8) 'सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्' इति कस्य वचः? भरत

(9) कृष्ण सार मृग पर तथा धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाये हुए दुष्यन्त सारथि को किस प्रकार प्रतीत हो रहा है?
उत्तर ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मृग रूप धारी यज्ञ का पीछा करते हुए मानो साक्षात् शिव को देख रहा हो।

(10) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के लेखक कौन है?
उत्तर कालिदास

(11) कालिदास के महाकाव्य कौन-कौन से है?
उत्तर (i) कुमारसम्भवम्
(ii) रघुवंशम्

Scanned with CamScanner

(12) कालिदास के गीतिकाव्य कौन-कौन से हैं?
उत्तर (i) ऋतुसंहार
(ii) मेघदूत

(13) कालिदास के नाटकों के नाम लिखिए?
(i) मालविकाग्निमित्र
(ii) विक्रमोर्वशीय
(iii) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(14) दुष्यन्त किस वंश का राजा था? पुरु वंश का

(15) शकुन्तला के जन्मदाता (पालनादि) पिता कौन थे?
उत्तर काश्यप ऋषि

(16) शकुन्तला के वास्तविक माता-पिता कौन थे?
माता -> मेनका
पिता -> गौतम

(17) 'राजन् आत्तमृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्य' यह वाक्य किसने किसको कहा?

(18) मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य संभव - यह किसके सौन्दर्य से सम्बन्धित है? शकुन्तला

(19) यत् अग्निम् आशङ्कसे तत् स्पर्शक्षमम् रत्नम् - यह वाक्य किसके द्वारा कहा गया है? दुष्यन्त

(20) शकुन्तला की सखियों के नाम लिखिए।
प्रियंवदा व अनुसूया

Scanned with CamScanner

निबन्धात्मक प्रश्नाः

प्रश्न 1. अभिज्ञानशाकुन्तलमाध्यमेन कविपरम्परायां कालिदासस्य स्थानं निर्धारयतु।

अथवा

'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' के सन्दर्भ में कालिदास की नाट्यकला की समीक्षा कीजिए।

अथवा

संस्कृत-नाट्य-साहित्य में कालिदास का वैशिष्ट्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—संस्कृत-साहित्य में कविकुलगुरु कालिदास का स्थान सर्वोपरि है। न केवल श्रव्य काव्य के रूप में अपितु दृश्य काव्य में भी इनका काव्य सौन्दर्य भारतीय संस्कृत साहित्य को समृद्ध करता है। अनेक भारतीय एवं पाश्चात्य समालोचकों ने कालिदास के ग्रन्थों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। समालोचना के आधार पर नाट्य-साहित्य में उनके द्वारा लिखित 'अभिज्ञान-शाकुन्तलम्' सर्वश्रेष्ठ नाटक है।

Scanned with CamScanner

नाटककार के रूप में कालिदास सर्वश्रेष्ठ नाटककार हैं। इन्होंने तीन नाटकों की रचना की — 1. मालविकाग्निमित्रम् 2. विक्रमोर्वशीयम् तथा 3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

1. **मालविकाग्निमित्रम्** — यह कालिदास विरचित प्रथम नाट्यकृति है। इसमें शुंगवंशीय राजा अग्निमित्र तथा रानी की परिचारिका मालविका का प्रेम वर्णित किया है। [illegible] ऐतिहासिक [illegible] की पृष्ठभूमि में उन्होंने स्वच्छन्द प्रेम का विकास प्रदर्शित किया है। यह पाँच अंकों का [illegible] प्रथम कृति होने से नाटककार का काव्य कौशल प्रौढ़ता रूप में दृष्टिगत नहीं होता। [illegible] नाटककार ने राजा के अन्तःपुर में वर्तमान काम, रानियों की परस्पर ईर्ष्या, राजा की [illegible] धारिणी की धीरता का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है।

2. **विक्रमोर्वशीयम्** — कालिदास की नाट्यकला सम्बन्धी विकास की दृष्टि से 'मालविकाग्निमित्रम्' के बाद 'विक्रमोर्वशीयम्' का स्थान है। पाँच अंकों के इस त्रोटक में उर्वशी और पुरूरवा की प्रसिद्ध पौराणिक कथा वर्णित है। वस्तुतः यह रूपक न होकर एक उपरूपक है। रूपक और उपरूपक के भेदों में त्रोटक नाटक उपरूपक प्रभेद है। उर्वशी एवं पुरूरवा का आख्यान ऋग्वेद के दशम मण्डल के 95 सूक्त में है। वहाँ यह पुरूरवा और उर्वशी संवाद के रूप में पाया जाता है। संवादात्मक रूप से इस आख्यान को कवि ने अपने नाटकीय कौशल से यथावसर अपनी कल्पना का उपयोग कर उपरूपक के रूप में प्रस्तुत किया है। अपनी कोमलकान्त पदावली से तथा शैली की मौलिकता से कवि ने इसे सर्वथा नवीन रूप में प्रस्तुत किया है। भरत मुनि का शाप, कार्तिकेय द्वारा किया नियम, उर्वशी का लता रूप में परिवर्तन, पुरूरवा का उन्माद एवं विलाप तथा पञ्चमांक का पूरा प्रकरण कवि की नवनवोन्मेषशालिनी नाट्य प्रतिभा का एवं उनकी कल्पना शक्ति का प्रतिफल है, जिससे एक साधारण सा संवाद नाटक के रूप में प्रस्तुत किया जा सका है।

इसमें शृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का सुन्दर चित्रण हुआ है। पात्रों की संख्या कम है, पर उनका मर्मस्पर्शी चित्रण है। यद्यपि इसकी भाषा शकुन्तला की तरह ध्वन्यात्मक एवं व्यञ्जक नहीं है, फिर भी इसमें प्रासादिकता एवं सौष्ठव है, छोटे-छोटे छन्दों के प्रयोग से यह रूपक और भी सुरुचिपूर्ण बन गया है। यद्यपि नाटकीय संविधान उतना सशक्त नहीं है जितना कि शकुन्तला का है, फिर भी कालिदास की विशिष्ट वर्णन चातुरी एवं कवित्व कल्पना दर्शनीय है।

3. **अभिज्ञान-शाकुन्तलम्** — कालिदास विरचित यह अन्तिम एवं सर्वश्रेष्ठ नाटक है, इसका कथानक महाभारत के आधार पर निर्मित है। महाभारत में शकुन्तला कथा आदि पर्व 68वें से 74वें सात अध्यायों में वर्णित है। वहाँ यह कथा नितान्त आरोचक एवं आदर्शविहीन है। परन्तु कालिदास ने अपनी कल्पना शक्ति से उसमें पर्याप्त परिवर्तन कर दिया है और आवश्यकतानुसार नवीन प्रसंगों की उद्भावना की है।

सी. ई. एम. जोड़ के शब्दों में 'अभिज्ञान-शाकुन्तलम्' अपार्थिव कल्पना रूपिणी उद्यान-वाटिका की अमृतमयी पारिजात लता है। वाणी के वरद पुत्र का यह अक्षय आलेख्य है। इसमें कालिदास की नाट्यकला का पूर्ण परिपाक हुआ है।" आलोचकों ने इस नाटक को सर्वश्रेष्ठ मानकर एक स्वर से प्रमाणित किया है—

"काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।"

Scanned with CamScanner

प्रेम और सौन्दर्य का सरस, हृदयग्राही एवं मर्मस्पर्शी चित्रण अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है। उसमें ओज के साथ मनोज्ञता और लघुत्व के साथ ही भावप्राञ्जलता का अद्भुत समन्वय विद्यमान है।

महाकवि कालिदास विरचित इन तीनों नाटकों की श्रेष्ठतम विशेषतायें हैं–घटना-संयोजन में सौष्ठव, वर्णनों एवं घटनाओं के चित्रण में स्वाभाविकता, सार्थकता और संकेतात्मकता, चरित्र-चित्रण में वैयक्तिकता, रचना-कौशल, कवित्व तथा रस-परिपाक, संस्कृत-साहित्य के अधिकांश नाटकों में अभिनेयता का लगभग अभाव-सा पाया जाता है, किन्तु कालिदास के नाटकों की यह महती विशेषता है कि वे अभिनय की दृष्टि से सर्वथा उपयुक्त है। इन्हीं विशेषताओं के कारण कालिदास नाट्यकारों में अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। 'अभिज्ञान-शाकुन्तलम्' के आधार पर ही कालिदास की नाट्य-कला संस्कृत-साहित्य में वैशिष्ट्यपूर्ण है। इसका प्रमुख कारण इस नाटक की ये विशेषताएँ हैं–

घटनाओं की सार्थकता–अभिज्ञान-शाकुन्तलम् की प्रत्येक घटना स्वाभाविक तथा सार्थक है। किसी विशिष्ट उद्देश्य से ही उसकी कल्पना एवं रचना भी हुई है।

वर्णनों में स्वाभाविकता–कालिदास के नाटकों का प्रत्येक स्थल वर्णन चातुरी एवं स्वाभाविकता से ओतप्रोत है। प्रत्येक वर्णन इतना सजीव एवं स्वाभाविक है कि पाठकों के समक्ष पूरा दृश्य ही उपस्थित हो जाता है। जैसे शाकुन्तलम् के प्रथम अंक में भागते हुए भयभीत मृग का वर्णन, रथ की गति का वर्णन, इसी तरह अन्य अंकों में स्थल-स्थल पर देखा जा सकता है।

चरित्र-चित्रण में वैयक्तिकता–कालिदास चरित्र-चित्रण में अत्यन्त कुशल हैं, उनके पात्र में अपना एक विशिष्ट व्यक्तित्व है। प्रत्येक पात्र की अपनी कुछ मुख्य विशेषतायें हैं, उनका विकास व्यवस्थित रूप में हुआ है। अभिज्ञान-शाकुन्तलम् के प्रायः सभी पात्र समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि हैं। इसी कारण महाकवि द्वारा उनका नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चित्रण उत्तम रूप में प्रस्तुत किया गया है। इससे ज्ञात होता है कि महाकवि को समाज के विभिन्न वर्गों की गति-विधियों का ज्ञान पूर्णरूपेण प्राप्त था तथा उनका मानव-प्रकृति निरीक्षण भी अत्यन्त गम्भीर था।

रचना-कौशल–कालिदास कथानक के संचयन तथा उसके निर्माण में अत्यन्त कुशल हैं। उन्होंने अ. शा. में महाभारत के एक साधारण और नीरस कथानक को अपनी रचना-कुशलता के ही कारण अनुपम तथा अत्यधिक सरस बना दिया है। उनके रचनाकौशल में उर्वरता, नवीनता तथा कल्पनाओं का बाहुल्य विद्यमान है।

संवादों में नाटकीयता–अ. शा. के सभी संवाद नाटकीयता से परिपूर्ण हैं। प्रायः सभी वाक्य सरल, चुस्त और छोटे-छोटे हैं।

भावपक्ष एवं कलापक्ष–महाकवि कालिदास भाव-पक्ष के चित्रण में जितने कुशल हैं उतने ही कलापक्ष के चित्रण में भी। उनकी रचनाओं में दोनों ही पक्ष समान दृष्टि से विद्यमान हैं।

उक्त नाट्य-वैशिष्ट्य के कारण महाकवि कालिदास का संस्कृत-नाट्य-साहित्य में अग्रगण्य स्थान है तथा उनकी नाट्य-कला सर्वोत्कृष्ट है।

प्रश्न 2. अभिज्ञान शाकुन्तलम् की कथा का उद्गम बताते हुए कालिदास द्वारा किये गये परिवर्तनों का उल्लेख कीजिए।

अथवा

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कथानक के मूल स्रोत की विवेचना कीजिए।

Scanned with CamScanner

उत्तर–अभिज्ञानशाकुन्तलम् की कथा का मूल स्रोत महाभारत के आदि पर्व का शकुन्तलोपाख्यान है। इसमें पौरवराज दुष्यन्त तथा ऋषिकन्या शकुन्तला के गान्धर्व विवाह का वर्णन है। इस उपाख्यान के आधार पर राजा दुष्यन्त अपनी सेना के साथ शिकार खेलने के लिए वन में जाता है। अनेक पशु पक्षियों का आखेट करता हुआ महर्षि कण्व के आश्रम में पहुँच जाता है। वहाँ पर उसका सामना शकुन्तला से होता है और शकुन्तला द्वारा अतिथि सत्कार के लिए आमन्त्रित किये जाने पर राजा आश्रम में जाता है और पूर्ण रूप से शकुन्तला पर मुग्ध हो जाता है। राजा प्रियंवदा से शकुन्तला के विषय में पूछता है। प्रियंवदा राजा के पूछने पर बताती है कि यह महर्षि कण्व की धर्मपुत्री है। इसका जन्म मेनका और विश्वामित्र के संसर्ग से हुआ है। इसके बाद राजा शकुन्तला से मिलता है और गान्धर्व विवाह का प्रस्ताव रखता है और शकुन्तला से स्वीकार किये जाने को कहता है। तत्पश्चात् शकुन्तला और दुष्यन्त का गान्धर्व विवाह सम्पन्न होता है। राजा शकुतन्ला को स्वनामांकित अँगूठी देकर शीघ्र ही आने को कहकर हस्तिनापुर अपने राज्य को वापस चला जाता है। तत्पश्चात् महर्षि कण्व शचीतीर्थ से वापस आश्रम लौटते हैं, प्रियंवदा दुष्यन्त-शकुन्तला के गान्धर्व विवाह की सूचना देती है। तत्पश्चात् महर्षि कण्व शकुन्तला को पतिगृह भेजने की व्यवस्था करते हैं। दुर्वासा ऋषि के शापवश अंगूठी गलते में तालाब में गिर जाती है, वहाँ हस्तिनापुर पहुँचने पर प्रमाण के अभाव में अर्थात् शापवश शकुन्तला को पहचानने से इन्कार कर देता है। शकुन्तला को हेमकूट पर्वत पर मरीचि के आश्रम में रखा जाता है। वहाँ शकुन्तला को एक तेजस्वी पुत्र जन्म लेता है, उसका नाम सबका दमन करने वाला होने के कारण ऋषि लोग सर्वदमन रखते हैं। आगे चलकर लोक का पालन करने वाला होने से उसका नाम भरत रखा जाता है।

इस कथानक में कुछ दोष हैं। सर्वप्रथम तो शकुन्तला और दुष्यन्त का अतिकामुकता गर्हणीय है। वे दोनों महर्षि कण्व की अनुपस्थिति में गान्धर्व विवाह कर लेते हैं। किसी अपरिचित व्यक्ति के आश्रम में आने पर सहज ही समागम के लिए राजी होना उचित प्रतीत नहीं होता है। दुष्यन्त तो महर्षि कण्व के दर्शन के लिए आया था, गान्धर्व विवाह करके तथा शकुन्तला का त्याग कर बिना मिले ही चला जाता है। इसे ध्यान में रखकर कालिदास ने कथा स्रोत में कुछ परिवर्तन किया है। जैसे राजा दुष्यन्त कण्व के आश्रम में ससैन्य नहीं अपितु अकेला ही जाता है। वहाँ जाने पर मालूम पड़ता है कि महर्षि कण्व लम्बे समय के लिए सोमतीर्थ गये हुए हैं। राजा को उसकी सखियाँ ही शकुन्तला का जीवन वृत्तान्त बताती हैं। नायक और नायिका के प्रेम का क्रमिक विकास होकर ही परिपाक होता है, जो मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक दृष्टियों से ही समीचीन जान पड़ता है। इस प्रकार महाकवि कालिदास ने मूल कथा स्रोत में आमूल परिवर्तन कर समाज को एक नवीन विधि का अहसास कराते हुए भारतीय संस्कृति को परिपुष्ट कर दिया है।

प्रश्न 3. इत्युक्तेः समीक्षा सविस्तरं करणीया।

अथवा

कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञान शाकुन्तलम् तत्रापि चतुर्थोऽङ्को यत्र याति शकुन्तला।

अथवा

अभिज्ञान शाकुन्तलम् कालिदासस्य रम्यतरं नाटकं चतुर्थाङ्कमाधिकृत्य वर्णयन्तु।

Scanned with CamScanner

अथवा

'काव्येषु नाटकं रम्यम्'–इत्युक्तिं अभिज्ञान शाकुन्तलमधिकृत्यम् विवेच्यताम्।

अथवा

"अभिज्ञान-शाकुन्तलम्" के चतुर्थांक का वैशिष्ट्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"तत्रापि चतुर्थोऽकः" उक्ति की श्रेष्ठता 'अभिज्ञान-शाकुन्तलम्' के परिप्रेक्ष्य में निरूपित कीजिए।

उत्तर–संस्कृत-नाट्य-साहित्य में कविकुलगुरु कालिदास विरचित "अभिज्ञान-शाकुन्तलम्" नाटक का स्थान सर्वोपरि है। इसमें सभी नाट्य-तत्वों का वर्णन बहुत ही वैशिष्ट्यपूर्ण है। कवि ने मानव जीवन के समस्त पक्षों एवं मनोभावना को स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत किया है।

नाट्य-तत्वों एवं अन्य सभी पक्षों की दृष्टि से इस नाटक की समालोचना करने पर इसके सात अंकों में से चतुर्थ अंक सर्वश्रेष्ठ है। इस अंक में पिता के गृह से विदा होकर शकुन्तला के पतिगृह जाने का दृश्य प्रस्तुत किया गया है। यह दृश्य अत्यन्त मर्मस्पर्शी तथा कारुणिक है। इस दृश्य में हम देखते हैं कि समस्त तपोवन, वहाँ के ऋषि, तपस्वीजन, पशु, पक्षी, वृक्ष, लतायें आदि सभी शकुन्तला के विरह के कारण दुःखी हैं। ऐसे वियोग के समय हृदय में करुण भाव का जागृत होना स्वाभाविक ही है। अतः इस प्रकार के भाव से ओत-प्रोत होने के कारण इसकी सर्वोत्तमता स्वीकार की गई है।

इस अंक के प्रारम्भिक दृश्य में पुष्पों का चयन करती हुई शकुन्तला की दोनों सखियों (प्रियंवदा तथा अनुसूया) दुर्वासा द्वारा दिये गये शाप को सुनती है। दुर्वासा का यह शाप ही सम्पूर्ण घटनाक्रम का केन्द्र-बिन्दु है। महाकवि ने इस शाप द्वारा एक ओर विप्रलम्भ द्वारा संयोग-शृङ्गार को पुष्ट किया है। साथ ही दूसरी ओर कर्त्तव्य-पालन में उपेक्षा के दण्ड को भी प्रतिपादित किया है।

यह अंक जीवन को उन्नत बनाने से सम्बन्धित सभी प्रकार के वैशिष्ट्यों से युक्त है। नारी-जीवन सार्थक बनाने के लिये अनुकरणीय महर्षि कण्व द्वारा शकुन्तला को दिया गया उपदेश तथा आशीर्वाद (4/18व 7), पिता का पुत्री के प्रति कर्त्तव्य, महर्षि कण्व द्वारा दुष्यन्त को भेजा गया सन्देश (4/17), कन्या सम्बन्धी उत्तरदायित्व को पूर्ण करने के अनन्तर पिता को प्राप्त होने वाला सन्तोष आदि अनेक वैशिष्ट्य इस प्रस्तुत अङ्क में विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त इस नाटक का अभिनय देखते समय इस चतुर्थ अङ्क के कथानक का सर्वाधिक दर्शकों पर प्रभाव पड़ता है। वे भावमग्न हो जाते हैं।

उक्त विवेचन के आधार पर यह सुस्पष्ट हो जाता है कि प्रस्तुत नाटक में चतुर्थ अङ्क ही सर्वश्रेष्ठ अङ्क है। अतः इसके सम्बन्ध में कही गई 'तत्रापि चतुर्थोऽङ्कः' की उक्ति सर्वथा सत्य है। वस्तुतः शाकुन्तल का चतुर्थ अंक शब्द निर्मित मानव हृदय ही है।

प्रश्न 4. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य पञ्चमाङ्कतः सप्तमाङ्कपर्यन्तं दृष्टिपथमागतस्य राज्ञः दुष्यन्तस्य चरित्रं वर्णयन्तु।

अथवा

दुष्यन्त शकुन्तलयोः चरित्र-चित्रणं कुरुत।

अथवा

Scanned with CamScanner

अभिज्ञान शाकुन्तलम् के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नाटक के नायक की चारित्रिक विशेषताओं को सोदाहरण प्रतिपादन कीजिए।

अथवा

'अभिज्ञान-शाकुन्तलम्' के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

राजा दुष्यन्त की चारित्रिक विशेषताओं को प्रकट कीजिए।

उत्तर–महाकवि कालिदास विरचित 'अभिज्ञान-शाकुन्तलम्' नाटक का नायक राजा दुष्यन्त है। वह सभी नाटकीय नायकों में श्रेष्ठ है। नायक के गुणों के आधार पर वह धीरोदात्त नायक सिद्ध होता है, क्योंकि धीरोदात्त नायक के अत्यधिक वीरता, गम्भीरता, क्षमा, स्थिरता, गर्वराहित्य इत्यादि सभी गुण उसमें विद्यमान हैं। वह पुरुवंशी क्षत्रिय राजा है। वह सुन्दर तथा गम्भीर आकृति वाला है। वह प्रभावशाली तथा मधुरभाषी है। वह बलिष्ठ तथा पराक्रमी होते हुए भी वह विनय से सम्पन्न है। उसकी पराक्रमशीलता एवं शूरवीरता से इन्द्र भी प्रभावित हैं और अपनी सहायता के लिए उसे बुलाते हैं। दानवों के वधार्थ राजा को स्वर्ग में जाना पड़ता है, उसकी प्रत्यञ्चा की टंकार मात्र से विघ्न दूर हो जाते हैं। उसके राज्य में निकृष्ट लोग भी कुमार्गगामी नहीं हैं, यहाँ तक कि प्रकृति भी उसका शासन मानती है।

वह मधुरभाषी है। प्रियंवदा द्वारा उसके मधुर भाषण की प्रशंसा की गई है। जिस प्रकार का मनोहर उसका बाह्य रूप है, उसी प्रकार का वह हृदय से भी है। उसका स्वभाव अत्यन्त स्निग्ध, ललित एवं सुसंस्कृत है। शकुन्तला के साथ हुआ प्रणय-सम्भाषण इस बात का द्योतक है। वह शकुन्तला के अपूर्व रूप लावण्य को देखकर उसकी ओर आकर्षित होता है, किन्तु एक भद्र पुरुष की तरह उसने यह पता लगा लेना अत्यन्त आवश्यक समझा कि उसका विवाह हो चुका है या नहीं, उसके साथ प्रेम करना धर्मानुकूल है अथवा नहीं।

वह ललित-कलाओं का अच्छा ज्ञाता है। संगीत-कलाभिज्ञ होने के साथ ही प्रकृति-निरीक्षण की शक्ति भी उसके अन्दर विद्यमान है। वह एक कुशल चित्रकार भी है। शकुन्तला के विरह से व्याकुल वह उसका चित्र बनाकर अपना मन बहलाता है।

इतना सब कुछ होने पर भी उसमें मानवोचित दुर्बलतायें भी हैं। शिकार के लिये भ्रमण करते हुए कण्व ऋषि के आश्रम में प्रविष्ट होने के बाद शकुन्तला को देखकर यथा संभव उसका पतन ही हुआ है। लुक-छिपकर युवती कन्याओं की विनोद-सम्पन्न क्रीड़ाओं का देखना, भेंट होने पर अपना मिथ्या परिचय देना, शकुन्तला को देखते ही उसे उपयोग योग्य स्त्री समझ लेना, माता द्वारा बुलाये जाने के सन्देश को प्राप्त कर केवल शकुन्तला के प्रेम में लीन होने के कारण अपने स्थान पर विदूषक को राजधानी भेज देना और उससे असत्य बोलना, विवाह के पश्चात् ऋषि कण्व के आगमन के पूर्व ही हस्तिनापुर लौट जाना आदि अनेक ऐसे कार्य हैं जिनसे उसकी मानवोचित दुर्बलताओं का स्पष्ट पता चल जाता है। अपने नगर में आने के बाद शकुन्तला को भूलना तथा उसके द्वारा सामने स्थित शकुन्तला को पहचानने से इन्कार कर देना उसके पतन की अन्तिम सीमा है। किन्तु इसके पश्चात् महाकवि ने उसके चरित्र को बड़ी चतुरता और योग्यता से ऊपर उठाया है। किसी भी मनोहर युवती को देखकर मोहित हो जाने की मधुकर-वृत्ति उसमें

Scanned with CamScanner

नहीं है ("अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्" तथा "अनार्यः परदारव्यवहारः")। पंचम अंक में उसके अत्यन्त धार्मिक तथा सांस्कृतिक होने का स्पष्ट पता लगता है। रूप सम्पन्न युवती द्वारा स्वयं उससे पत्नी के रूप में स्वीकार करने की प्रार्थना तथा ऋषि का भय होने पर भी वह अपनी धर्मपरायणता को नहीं त्यागता है।

षष्ठ अंक में अँगूठी के दर्शन के बाद दुष्यन्त को शकुन्तला के साथ हुए परिणय का स्मरण हो जाता है। उसको महान् पश्चाताप है। इसी कारण वह राज्यभर में होने वाले वसन्तोत्सव को बन्द करा देता है। शोक में मग्न होने पर भी वह अपने कर्त्तव्य को नहीं भूला है। धर्म एवं न्याय के आधार पर वह राज्य-कार्य में संलग्न है। इन्द्र का सन्देश मिलने पर वह तुरन्त ही उसकी सहायतार्थ राक्षसों से युद्ध के लिए चल पड़ता है। यह उसके कर्त्तव्य-परायण होने का स्पष्ट प्रमाण है। सप्तम् अंक में राजा का चरित्र और भी उन्नत ही हुआ है। यहाँ पर राजा की शिशुवत्सलता का स्पष्ट परिचय मिलता है। शकुन्तला को देखकर वह क्षमा याचना करता हुआ उसके पैरों में गिर पड़ता है।

इस प्रकार महाकवि ने दुष्यन्त के चरित्र में क्रमिक विकास को दिखलाया है जो राजा प्रारम्भ में एक साधरण कामुक पुरुष प्रतीत होता था वही बाद में एक सच्चे प्रेमी, कर्त्तव्यपरायण, विनम्र, धार्मिक और पुत्रवत्सल आदि अनेक रूपों में दिखाई देता है।

प्रश्न 5. शकुन्तलायाः चरित्रं चित्रणम्।

अथवा

अभिज्ञान-शाकुन्तलम् नाटक की नायिका का चरित्र-चित्रण सोदाहरण कीजिए।

अथवा

'अभिज्ञान-शाकुन्तलम्'' की नायिका की चारित्रिक विशेषताओं का सोदाहरण विश्लेषण कीजिए।

अथवा

''अभिज्ञान-शाकुन्तलम्'' की नायिका का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

शकुन्तला की चारित्रिक विशेषताओं पर एक लेख लिखिए।

उत्तर–महाकवि कालिदास विरचित 'अभिज्ञान-शाकुन्तलम्' नाटक की नायिका शकुन्तला है। यहाँ महाकवि ने इसे एक आदर्श नारी के रूप में चित्रित किया है। वह मुग्धा नायिका है। तरुण कन्या के रूप में वह विवाह का नाम सुनकर भी चिढ़ने लगती है। वह अत्यधिक सुन्दर है। उसके रूप सौन्दर्य को देखकर राजा मन्त्रमुग्ध हो जाता है। उसके सौन्दर्य में नैसर्गिकता है। वल्कल वस्त्रों में भी वह अनुपम सुन्दरी दिखलाई देती है। प्रकृति से ही लावण्य युक्त शकुन्तला में यौवन स्पष्ट रूप से झलक रहा है। तपोवन में लालन-पालन होने के कारण उसमें स्वाभाविक सुशीलता, सरलता तथा मुग्धता भी है। वह सुशील और सलज्जा है। राजा का प्रथम दर्शन करने के पश्चात् यद्यपि उसके हृदय में काम-भाव उत्पन्न होता है किन्तु फिर भी वह उसे स्पष्ट नहीं होने देती है। राजा द्वारा उसकी प्रशंसा किये जाने पर वह लज्जावनत हो जाती है। स्वाभाविक लज्जा के कारण ही उसने अपनी सखियों के समक्ष राजा के प्रति उत्पन्न हुए अपने प्रेम-विकार को प्रकट नहीं किया है। बहुत अधिक आग्रह करने पर ही अपनी काम-पीड़ा को सखियों से कहती है।

तपोवन में लालन-पालन होने के कारण उसका प्रकृति से घनिष्ठ प्रेम है। उसका वृक्षों,

Scanned with CamScanner

...पशुओं एवं पक्षियों आदि के प्रति सहोदर जैसा स्नेह है। वह आश्रम के वृक्षों को जल ... स्वयं जल पिया करती है। प्रियमण्डना होने पर भी वृक्षों के नवीन पत्तों आदि को तोड़ती नहीं है तथा उनके प्रथम पुष्पोद्गम में उत्सव मनाती है। वन ज्योत्स्ना से आलिंगन, पशु-पक्षियों ... उनकी सेवा करना आदि उसके निश्छल प्रेम के परिचायक हैं "पातुं न प्रथमं व्यवस्यति" ....इत्यादि। विदाई के समय तपोवन के वृक्षों तथा मृगादि से भी विदाई होती है। न केवल वह अपितु समस्त तपोवन शकुन्तला के प्रति स्नेह प्रकट करता है। विभिन्न वृक्ष उसके लिए आभूषण आदि अंगराग विदाई के समय भेंट स्वरूप प्रदान करते हैं। इसी प्रकार पशु-पक्षी भी उसके विरह से व्याकुल हैं। यह दृश्य शकुन्तला के तपोवन के प्रति स्नेह को दर्शाता है।

वह पूर्णतया पतिव्रता नायिका है। उसके हृदय में अपने पति के लिए असीम तथा अगाध प्रेम है। दुर्वासा ऋषि के तपोवन में प्रवेश करते समय भी उसका मन अपने प्रियतम के चिन्तन में ही निमग्न रहता है। राजा के समीप जाने में उसके मन में उत्साह रहता है। तत्पश्चात् राजा द्वारा उसे न पहचानने पर वह एक बार तो क्रुद्ध अवश्य होती है किन्तु बाद में अपने भाग्य को ही दोषी ठहराती है। वह राजा को भूलती नहीं है तथा उसके हृदय में राजा के लिये निरन्तर प्रेम-भावना विद्यमान रहती है। वह विरहिणी के वेश में अपने चरित्र की रक्षा करते हुए जीवन-यापन करती है। उस समय उसका चित्रण व्रतोपवास से कृश, पतिव्रता, पुत्रवत्सला, उदासीन प्रौढ़ा नायिका की भाँति किया गया है। अपने पालन करने वाले पिता कण्व तथा आश्रम की तपस्विनी गौतमी के प्रति उसका अगाध प्रेम है।

इस प्रकार शकुन्तला अत्यन्त सच्चरित्र, शीलसम्पन्न, पतिव्रता तथा सलज्जा आदि गुणविशिष्ट नायिका है। यह शकुन्तला कालिदास की कला का सर्वोत्कृष्ट आदर्श है।

प्रश्न 6. अभिज्ञान शाकुन्तलम् के आधार पर महर्षि कण्व का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—ऋषि कण्व अपने आश्रम के कुलपति हैं। इनका दूसरा नाम काश्यप है। ये नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं तथा अग्निहोत्र करने वाले ब्राह्मण हैं। वे महान् तपस्वी तथा त्रिकालज्ञ हैं। उनके तप के प्रभाव के कारण ही राक्षसगण उनकी उपस्थिति में यज्ञ में विघ्न नहीं डालते हैं। तपोवन में कण्व के तप का प्रभाव इतना है कि वृक्ष भी शकुन्तला की विदाई के समय वस्त्र तथा आभूषण प्रदान करते हैं।

महर्षि कण्व का चरित्र ऋषि के रूप में, पिता के रूप में, उपदेष्टा के रूप में और अन्य भी सभी स्वरूपों में सर्वोत्कृष्टता के साथ प्रकट हुआ है। वे परित्याग की गई शकुन्तला का अपनी निजी पुत्री के सदृश पालन-पोषण करते हैं। शकुन्तला के प्रति उनका स्नेह निः-स्वार्थ है। विदाई के समय उनका वात्सल्य-प्रेम पूर्ण शिखर पर पहुँच जाता है। तपस्वी होने पर भी एक साधारण गृहस्थ की तरह अपनी पुत्री की विदाई से उनका गला आँसुओं से अवरुद्ध हो जाता है, दृष्टि निःचेष्ट हो जाती है।

तपस्वी होने पर भी वे लोक व्यवहार से भली-भाँति परिचित हैं। शकुन्तला की विदाई के समय राजा के लिए उनके द्वारा भेजा गया सन्देश इसका परिचायक है। वे पूर्णतया लोक-व्यवहार में कुशल थे। शकुन्तला को उन्होंने जो उपदेश दिया है वह भी समाज के लिये एक महान् आदर्श है। यह भारतीय संस्कृति की पुनीततम भावनाओं से ओत-प्रोत है।

Scanned with CamScanner

[illegible] मनोविज्ञान के भी ज्ञाता हैं, वे जानते हैं कि समय के बीतने पर दुःख स्वयं ही [illegible] [illegible] जाता है। शकुन्तला के द्वारा तपोवन से बिछुड़ने का दुःख प्रकट करने पर वे [illegible] [illegible] के आश्वासन प्रदान करते हैं।

इस प्रकार महर्षि कण्व का चरित्र लौकिक एवं अलौकिक तत्वों का सम्मिश्रण है। इन्हीं [illegible] पर उपदेशों का वर्णन होने के कारण ही चतुर्थ अंक को नाटक का सर्वश्रेष्ठ अंक स्वीकार किया गया है। उनका चरित्र समाज के लिए आदर्श है।

प्रश्न 7. उपमा कालिदासस्य इत्युक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलमाधिकृत्य प्रमाणयन्तु?

अथवा

'अभिज्ञान-शाकुन्तलम्' के आधार पर उपमा-कालिदासस्य का सोद्धरण विवेचन कीजिए।

उत्तर–महाकवि कालिदास मूलतः रससिद्ध कवि हैं, फिर भी उनकी रचना के प्रवाह में स्वाभाविक रूप से आए हुए अलंकार उनके काव्य-सौन्दर्य में वृद्धि करते हैं। कविता-कामिनी के विलास कालिदास के काव्यों में लगभग सभी अलंकारों का प्रयोग देखा जा सकता है। उनमें अर्थालंकारों की प्रमुखता है।

अर्थालंकारों में कवि ने स्वाभाविक उपमा एवं अर्थान्तरन्यास का सुन्दर प्रयोग किया है। इसमें भी उपमा के क्षेत्र में कालिदास अनुपम हैं। इनकी उपमा योजना सरसता, रम्यता, विविधता तथा मार्मिकता की दृष्टि से बेजोड़ है। स्तथ-हि उपमाओं का प्रयोग भावानुकूल, अनूठा एवं विषयानुकूल है। ये स्पष्ट एवं नित्य व्यवहार में दिखाई देने वाली होने के साथ शास्त्रीय विषयों से अनुप्राणित हैं।

'शाकुन्तलम्' नाटक में भी कवि ने अनेक सुन्दर उपमाओं का प्रयोग किया है। नाटक के प्रथमांक में शकुन्तला के सौन्दर्य प्रसंग में वर्णित निम्न श्लोक सुन्दर उपमाओं का भण्डार है–

'अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू। कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्।' अर्थात् शकुन्तला की अधर लालिमा किसलय राग के समान है। भुजायें शाखायें जैसी हैं तथा प्रत्येक अंक में लता कुसुम सदृश यौवन व्याप्त है।

प्रथमांक में ही **'चीनांशुकमिव'** में उपमा का द्रष्टव्य है। द्वितीय अंक में "गिरिचर इव नागाः" में भी उपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है इसी प्रकार पञ्चमाङ्क में हस्तिनापुर जाते हुए ऋषि कुमारों के बीच शकुन्तला ऐसी ज्ञात होती है मानों पीले पत्तों के बीच नवीन किसलय हुआ हो– **"मध्येतपोधनानां किसलयमिव पाण्डुपत्राणाम्।"** वृद्ध एवं सुखी ऋषियों की आकृतियों के मध्य पल्लवित लता जैसी युवती शकुन्तला के लिए यह उपमा कितनी यथार्थ है।

आपन्नसत्वा शकुन्तला के अप्रतिम लावण्य से भ्रमित दुष्यन्त की वही दशा हो रही है जो कि उस भ्रमर की होती है जो कि प्रातः काल तुषार से भरे हुए कुन्द पुष्प का न तो मकरन्द ही पान कर सकता है और न उसे छोड़कर अन्यत्र ही जा सकता है–

"भ्रमर इव विभाते कुन्दमन्तस्तुषारं
न खलु परिभोक्तु नैव शक्नोमि हातुम् ॥"

कालिदास द्वारा प्रदत्त उपमाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये सृष्टि के विविध पदार्थों लता, वृक्ष, फूल, फल, प्राणि-वर्ग, आकाश, सूर्य, चन्द्र, ग्रह नक्षत्रादि से ली गई हैं।

Scanned with CamScanner

महर्षि कण्व को सहसा प्राप्त नवजात शकुन्तला अर्कवृक्ष पर संयोगवश गिर पड़ने वाला नवमालिका कुसुम ही है–''अर्कस्योपरि शिथिलच्युतमिव नवमालिका कुसुमम्।''

लिङ्गसाम्य, वर्णसाम्य, यथार्थता एवं स्पष्टता के अतिरिक्त कालिदास की उपमाओं की एक विशेषता यह भी है कि वे वातावरण के अनुकूल एवं शास्त्रानुप्राणित हैं। अनेक अपूर्व कल्पनाओं एवं मनोव्यापारों से गृहीत उपमायें भी सुन्दर हैं। महर्षि द्वारा प्रयुक्त उपमायें उनके वातावरण विद्याभ्यास एवं ऋषिजनोचित अनुभव तथा व्यापार से अनुप्राणित हैं। उदाहरणार्थ दुष्यन्त को प्राप्त शकुन्तला उसी प्रकार अशोचनीय बन गई है जैसे सुशिष्य को दी गई विद्या अशोचनीय हो जाती है–''**वत्से सुशिष्टय परिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता।**''

इस प्रकार महाकवि कालिदास के सन्दर्भ में ''उपमा कालिदासस्य'' का प्रयोग शाकुन्तल में भी पूर्णतया समुचित प्रतीत होता है।